PAGE 1
DATE 05/4/18

रेखाचित्र या 'आरेखण' (ड्राइंग) एक दृश्य कला है जो द्वि-आयामी माध्यम को चित्रित करने के लिए किसी भी तरह के रेखाचित्र उपकरणों का उपयोग किया जाता है।

'रेखाचित्र' शब्द अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जैसे 'स्केच' में रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्र प्रस्तुत किया जाता है, ठीक वैसे ही शब्द रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके समग्र रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। ये व्यक्ति प्राय: वे होते हैं जिनसे लेखक किसी न किसी रूप में प्रभावित रहा है या जिनसे लेखक की घनिष्ठता अथवा समीपता हो।

रेखाचित्र का अभिप्राय:—

रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति वस्तु या दृश्य के आकार को खींचकर सामने लाना। चित्रकार अपनी पेंसिल एवं रंगों के द्वारा किसी व्यक्ति वस्तु या दृश्य को साकार और सजीव बना देता है

प्रयोगवाद (1943 – 1952)

आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्वाधीनता/आज़ादी प्राप्ति के आसपास की नई काव्य-चेतना को व्यापक अर्थों और संदर्भों में प्रयोगवाद तथा नयी कविता के नाम से संबोधित किया गया। यह काव्य आंदोलन अनेक तरह की विचारधाराओं, जीवन-मूल्यों, सामाजिक-राजनीतिक आघातों के संघर्ष से उत्पन्न हुआ। यह काव्य आंदोलन रचना-प्रक्रियाओं की विभिन्न शैलियों को अपने में अभिन्न रूप से आत्मसात करता हुआ रचनात्मक विकास की अनेक दिशाओं में विकसित होता रहा। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश में नव-निर्माण और ब्रिटिश साम्राज्यवाद की दासता की जंजीरों से मुक्त होने का हर्ष था साथ ही हर्ष के भीतर एक घनीभूत पीड़ा भी व्याप्त थी कि राजनीतिक स्वतंत्रता मिलने पर भी देश सामाजिक-आर्थिक रूप से साम्राज्यवादी चंगुल से मुक्त होगा अथवा नहीं?

आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रयोगवाद का जन्म छायावाद की अतिशय अशरीरी कल्पना, सूक्ष्मतावादी सौंदर्य-बोध ~~आदि~~ आदि के विरोध से हुआ। ऐतिहासिक दृष्टि से प्रयोगवाद का आरंभ 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित काव्य संग्रह 'तारसप्तक' से हुआ। 'तारसप्तक' की रचनाओं के संदर्भ में बार-बार 'प्रयोग' शब्द का प्रयोग किया गया है। इस संदर्भ में अज्ञेय का मत है-"प्रयोग सभी काल के कवियों ने किए हैं। यद्यपि किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृति स्वाभाविक ही है किन्तु कवि क्रमशः अनुभव करता आया है कि जिन क्षेत्रों में प्रयोग हुआ है, उनमें आगे बढ़कर अब उन क्षेत्रों का अन्वेषण करना चाहिए जिन्हें अभी तक छुआ नहीं गया या अभेद्य मान लिया गया है।"

प्रयोगवाद के आरंभ को लेकर विद्वानों में परस्पर मतभेद है। अधिकांश विद्वानों ने तो अज्ञेय को प्रयोगवाद का प्रवर्तक माना है। कुछ विद्वानों ने नलिन विलोचन शर्मा की कविता तथा सन 1937 से प्रयोगवाद माना है तो किसी ने निराला की कविता को ही प्रयोगवाद की प्रथम रचना माना है।

प्रयोगवादी कविता के [illegible] की [illegible] करते हुए डॉ० [illegible] कहते हैं —

“ प्रयोगवादी कवि का सामान्य मनोभूमि समाज के प्रतिदिन जीवन का सत्य है। प्रयोगवादी कवि ने विराट सत्य के बीच और जीवन के बीच आत्मा की खोज की चेष्टा की थी; वह सत्य सही [illegible] समाज के जीवन का सत्य था। अतः प्रश्न यह उठाया गया कि क्यों न हम उसी यथार्थ को अभिव्यक्ति दे दें, जिसे हम भोगते हैं, अनुभव करते हैं अथवा जिसे हम आत्मसात कर लेते हैं।”

प्रयोग शब्द का सामान्य अर्थ है, नई दिशा में अन्वेषण का प्रयास। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोग निरंतर चलते रहते हैं। काव्य के क्षेत्र में भी पूर्ववर्ती युग की प्रतिक्रिया स्वरूप या नवीन युग-सापेक्ष चेतना की अभिव्यक्ति हेतु प्रयोग होते रहे हैं। हिन्दी काव्य में परिवर्तनशील तथा जागरूक कवियों में रूढ़ियों को तोड़कर नवीन राह पर चलने की प्रवृत्ति प्रारम्भ से दिखाई पड़ती है। प्रयोगवाद का उद्भव छायावाद तथा प्रगतिवाद की रूढ़ियों की प्रतिक्रिया में हुआ। छायावादी काव्य में वैयक्तिकता तो थी, परंतु उसमें उदात्त भावना थी। इसके विपरीत प्रगतिवाद में यथार्थ का चित्रण तो था किंतु उसका प्रतिपाद्य विषय पूर्णतः सामाजिक समस्याओं पर आधारित था साथ ही उसमें राजनीतिक तत्व भी विद्यमान थे। अतः इन दोनों की प्रतिक्रिया स्वरूप प्रयोगवाद का उद्भव हुआ जो 'घोर अहंवादी' वैयक्तिकता एवं नग्न-यथार्थवाद' को लेकर चला। लेकिन 1943 में अज्ञेय के संपादन में 'तारसप्तक' के प्रकाशन से प्रयोगवादी कविता का आकार स्पष्ट होने लगा तथा दूसरे सप्तक के प्रकाशन वर्ष 1951 तक यह पूर्णतः स्पष्ट हो गया। अज्ञेय ने 'तारसप्तक' की भूमिका में प्रयोगवादी कवियों को 'राहों के अन्वेषी' कहा है। ~~[illegible]~~ उन्होंने तारसप्तक में ऐसे सात कवियों को अपनाया है जो किसी एक स्कूल के नहीं हैं, किसी एक विचारधारा के नहीं हैं, किसी मंजिल पर पहुँचे हुए नहीं हैं, अभी राही हैं - राही नहीं, राहों के अन्वेषी। इनमें काव्य के प्रति एक अन्वेषी का दृष्टिकोण उन्हें

मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 03 अगस्त, 1886 (संवत्-1943 (1886+57)) को भगवद्भक्त, हिन्दी काव्य प्रेमी वैश्य परिवार मे उत्तरप्रदेश के चिरगाँव झाँसी मे हुआ। उनके पिता सेठ रामचरण मर्यादा पुरुषोत्तम राम के भक्त थे तथा 'कनकलता' उपनाम से पद्यरचना भी करते थे। गुप्तजी की शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। उन्होंने 12-16 वर्ष की उम्र मे ही कविता ~~लिख~~ करना आरंभ कर दिया था। प्रारंभ मे उनकी कविताएँ कलकत्ता से निकलने वाली वैश्यो की जातीय पत्रिका 'वैश्योपकारक' मे प्रकाशित होती रही। एक बार उन्होंने अपने पिता की पुस्तिका मे एक छप्पय लिख दिया। उसे पढ़कर उनके पिता अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें श्रेष्ठ कवि होने का आशीर्वाद दिया।

गुप्तजी की 'हे भक्त' शीर्षक कविता से प्रभावित होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया। द्विवेदी जी की देख-रेख मे उनका कविता लिखने का क्रम चलता रहा एवं इन कविताओं का प्रकाशन 'सरस्वती' पत्रिका मे होता रहा। गुप्तजी स्वभाव से ~~बड़े~~ अत्यंत सरल प्रकृति के व्यक्ति थे। राष्ट्रीय भाव उनके जीवन और उनकी कविताओं में भरा पड़ा है। असहयोग आंदोलन मे उन्होंने जेल-यात्रा भी की थी। सन् 1948 में आगरा वि०वि० से उन्हें डी०लिट० की उपाधि से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति द्वारा उन्हें 1952-1964 तक राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए। सन् 1953 ई. में भारत सरकार ने उन्हें पद्मविभूषण से सम्मानित किया। साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 12 दिसंबर, 1964 ई. को हिन्दी के राष्ट्रकवि गुप्त जी का निधन हो गया।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में वे खड़ी बोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि हैं। उन्हें साहित्य जगत में 'दद्दा' नाम से संबोधित किया जाता था। उनकी कृति 'भारत-भारती' (1912) भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और यही कारण था कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी दी थी। उनकी जयंती 03 अगस्त को प्रत्येक वर्ष 'कवि दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

'साकेत' नामक ~~रचना~~ पुस्तक पर गुप्त जी को 'मंगला-प्रसाद पारितोषिक' मिला था। इसमें उन्होंने उर्मिला के प्रति उपेक्षित उपेक्षित भावना को दूर किया है।

गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता है। भारत-भारती में देश की वर्तमान दुर्दशा पर क्षोभ प्रकट करते हुए कवि ने देश के अतीत का अत्यंत गौरव और श्रद्धा के साथ गुणगान किया। भारत श्रेष्ठ था, है और रहेगा का भाव इन पंक्तियों में गुंजायमान है—

"भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहां?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहां?
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है।"

"प्रेम, प्रकृति और मानव सौन्दर्य की लाक्षणिक रहस्यात्मक सूक्ष्म अभिव्यंजना जिस काव्य में होती है, उसे छायावाद कहा जाता है।" — 'छायावाद' (1918–36)

आधुनिक काल के तृतीय चरण को छायावादी काव्य कहा गया है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एवं महादेवी वर्मा की रचनाएं छायावादी विशेषताओं से युक्त हैं एवं परिमाण की दृष्टि से भी पर्याप्त हैं। इनकी रचनाओं में उच्च कोटि का कवित्व, अनुभूति की तीव्रता विद्यमान है साथ ही परंपरागत तत्वों का समावेश करते हुए परवर्ती काव्य के विकास को भी प्रभावित किया, एवं जनजीवन को समग्रता के साथ अभिव्यक्त किया। परिणामस्वरूप सदियों की दासता से पीड़ित जनता में आजादी की चेतना पूरी शक्ति के साथ सम्पूर्ण देश में उद्वेलित हो गई। भारतीय पुनर्जागरण सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सभी क्षेत्रों में एक साथ हुआ।

स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, गोपाल कृष्ण गोखले, बालगंगाधर तिलक, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने देश में नवजागरण का शंख फूंक दिया। फलत: उस काल की कविता पर इन सभी महापुरुषों के जीवन मूल्यों एवं सिद्धान्तों का व्यापक प्रभाव पड़ा। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में छायावादी काल के सभी कवि इनसे प्रभावित हैं।

छायावादी कविता तत्कालीन युग की परिस्थितियों से ओत-प्रोत (उद्भूत) है। द्विवेदी युग की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप जहाँ उसमें स्थूलता, नैतिकता एवं इतिवृत्तात्मकता का विरोध हुआ वहीं तत्कालीन पराधीनता ने राष्ट्रीयता, आत्मगौरव, मानववाद जैसे मूल्यों का समावेश करा दिया। कविता अन्तर्जगत की ओर उन्मुख हो गई तथा भाषा में सूक्ष्मता, वक्रता, लाक्षणिकता का समावेश हो गया।

'छायावाद' का प्रयोग प्रारंभ में व्यंग्य रूप से उन काव्यों के लिए किया गया जो 'अस्पष्ट' थी, जिनकी छाया (अर्थ) कहीं और पड़ती थी। कालान्तर में यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौन्दर्य में 'आध्यात्मिक छाया' (रहस्यवाद) होता —

'छायावाद' के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए प्रमुख विद्वानों के मत / परिभाषाएं: —